ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

"विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण में महिलाओं की भूमिका"

डॉ0 रविन्द्र सिंह राठौड, सह–आचार्य, अहिंसा एवं शांति विभाग , जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राज.) 341306
लीला महर्षि, शोधार्थी, अहिंसा एवं शांति विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राज.) 341306,
nandinisahal2110@gmail.com

सारांश

''बसुंधरा–तले भारत–रमणी नुहे हीन नुहे दीन
अमर कीरति कोटि युगे केभें जगतुं नोहिब जीन।''

अर्थात् भारत की नारी पृथ्वी पर किसी की तुलना में न तो हीन है, न दीन है। संपूर्ण जगत में उसकी अमर कीर्ति युगों–युगों तक कभी लुप्त नहीं होगी यानी सदैव बनी रहेगी। भारतीय साहित्य की अमर विभूति, स्वाधीनता सेनानी तथा ओडिया भाषा की सुप्रसिद्ध नारी कवि 'उत्कल भारती' कुंतला कुमारी साबत का लगभग 100 वर्ष पहले किया गया यह उद्घोष नए भारत की नीतियों को दिशा दे रहा है।

विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक है। सरकार, नागरिक समाज और निजी क्षेत्र को महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक सुरक्षा में निवेश करना चाहिए। महिलाओं को समान अवसर और अधिकार प्रदान करके, हम एक अधिक समावेशी, न्यायसंगत और समृद्ध भारत का निर्माण कर सकते हैं।

हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भी कहते है कि – हम लोग एक बात कभी–कभी बोलते हैं, नारी तू नारायणी। लेकिन ध्यान देने वाली बात यह भी है कि हमारे यहां कहा जाता है, नर करणी करे तो नारायण हो जाए। यानी नर को नारायण होने के लिए कुछ करना पड़ेगा। लेकिन नारी के लिए क्या कहा है, नारी तू नारायणी। अब देखिए कितना बड़ा फर्क है। हम बोलते हैं, लेकिन अगर सोचा तो हमारे पूर्वजों ने कितने गहन चिंतन से हम पुरूषों के लिए कहा, नर करणी करे तो नारायण हो जाए। लेकिन माताओं–बहनों के लिए कहा, नारी तू नारायणी।

मूल शब्द : विकसित भारत, महत्वाकांक्षी, योगदान, सशक्तिकरण, जागरूकता, डिजिटल इंडिया, सहायता समूह, तकनीकी क्षेत्र, आयुष्मान, मिशन, प्रौद्योगिकी, उत्कृष्ट प्रदर्शन, न्यायसंगत आदि।

प्रस्तावना

भारत, विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, भारत सरकार ने 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। "विकसित भारत 2047" का दृष्टिकोण समावेशी और टिकाऊ विकास पर आधारित है, जिसमें समाज के सभी वर्गों की भागीदारी आवश्यक है। इस संदर्भ में, महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। महिलाएं न केवल जनसंख्या का आधा हिस्सा हैं, बल्कि वे परिवार, समाज और अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। उनकी भागीदारी और सशक्तिकरण विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

वर्तमान समय में, भारतीय महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति कर रही हैं। उदाहरण के लिए– "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" जैसे सरकारी कार्यक्रमों और जागरूकता अभियानों के परिणामस्वरूप, लड़कियों की शिक्षा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आज, महिलाएं उच्च शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में भी सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। जैसे की, चंद्रयान 3 मिशन में महिला वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महिलाएं उद्यमिता, स्वयं सहायता समूहों और सूक्ष्म वित्त के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। जैसे की, विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में, महिला स्वयं सहायता समूह स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा दे रहे हैं और महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान कर रहे हैं। डिजिटल इंडिया के तहत, महिलाएं ई–कॉमर्स और ऑनलाइन व्यवसायों में भी भाग ले रही हैं। पंचायती राज संस्थानों में महिलाओं के लिए आरक्षण ने जमीनी स्तर पर उनकी राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाया है। आज, महिलाएं संसद, राज्य विधानसभाओं और स्थानीय निकायों में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं। जैसे की, वर्तमान में, भारत की राष्ट्रपति एक महिला है, जो महिला सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली प्रतीक है। सरकार ने मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं ने महिलाओं को सस्ती स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच प्रदान की है। भारतीय महिलाएं अब तकनीकी क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बना रही हैं। जैसे की, कई भारतीय महिलाएँ आईटी और सॉफ्टवेयर कंपनियों में नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं। हालांकि, अभी भी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। लैंगिक असमानता, हिंसा, भेदभाव और सीमित संसाधनों तक पहुंच, महिलाओं के विकास में बाधाएं उत्पन्न करती हैं। विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त

करने के लिए, इन बाधाओं को दूर करना और महिलाओं को समान अवसर और अधिकार प्रदान करना आवश्यक है।

नेतृत्व और शासन –द्रौपदी मुर्मू :भारत की वर्तमान राष्ट्रपति, शासन के उच्चतम स्तर पर महिलाओं के नेतृत्व को प्रदर्शित करती हैं।

निर्मला सीतारमणः भारत की वित्त मंत्री, देश की आर्थिक नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

स्थानीय पंचायत नेताः भारत भर में हजारों महिलाएं स्थानीय शासी निकायों में निर्वाचित नेताओं के रूप में काम करती हैं, जो जमीनी स्तर पर बदलाव ला रही हैं।

सर्वोच्च न्यायालय की न्यायाधीशः महिलाएं तेजी से देश के सर्वोच्च न्यायालयों में भूमिकाएँ निभा रही हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी– इसरो वैज्ञानिकः महिला वैज्ञानिकों ने भारत के अंतरिक्ष मिशनों, जिनमें चंद्रयान–3 और मंगल ऑर्बिटर मिशन (मंगलयान) शामिल हैं, में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जैव प्रौद्योगिकीविद् और चिकित्सा शोधकर्ता– महिलाएं चिकित्सा अनुसंधान में सबसे आगे हैं, नए उपचार और प्रौद्योगिकियां विकसित कर रही हैं।

सॉफ्टवेयर इंजीनियर और आईटी पेशेवरः महिलाएं भारत के बढ़ते आईटी क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, नवाचार और तकनीकी प्रगति में योगदान दे रही हैं।

एआई विकास में महिलाएं: महिलाएं अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकास के क्षेत्रों में अधिक से अधिक भूमिकाएँ निभा रही हैं।

आर्थिक सशक्तिकरण–स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) सदस्यः लाखों महिलाएं एसएचजी में भाग लेती हैं, सूक्ष्म वित्त, उद्यमिता और सामुदायिक विकास में संलग्न हैं।

उद्यमीः महिलाएं कपड़ा और हस्तशिल्प से लेकर प्रौद्योगिकी और ई–कॉमर्स तक विभिन्न क्षेत्रों में सफल व्यवसाय शुरू कर रही हैं।

कृषि श्रमिक और किसानः महिलाएं कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण आजीविका में योगदान करती हैं।

कपड़ा उद्योग में महिलाएं– कई महिलाएं कपड़ा उद्योग में कुशल श्रमिक हैं, और भारत से वस्त्रों के निर्यात में बड़ा योगदान देती हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा– शिक्षक और प्रोफेसरः महिलाएं भारत की शिक्षा प्रणाली की रीढ़ हैं, जो भावी पीढ़ियों के दिमाग को आकार दे रही हैं।

डॉक्टर और नर्सः महिलाएं आवश्यक स्वास्थ्य सेवा प्रदाता हैं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों और आपात स्थितियों के दौरान।

सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता (आशा): महिलाएं दूरदराज के समुदायों को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

चिकित्सा क्षेत्रों में शोधकर्ताः महिलाएं चिकित्सा क्षेत्रों में महत्वपूर्ण शोध कर रही हैं, और कई बीमारियों के इलाज और उपचार खोजने के लिए काम कर रही हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव– कलाकार, लेखक और फिल्म निर्माताः महिलाएं विभिन्न कला रूपों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता व्यक्त कर रही हैं और सांस्कृतिक कथाओं को आकार दे रही हैं।

सामाजिक कार्यकर्ता– महिलाएं सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और पर्यावरण संरक्षण के लिए आंदोलनों का नेतृत्व कर रही हैं।

पत्रकार और मीडिया पेशेवर– महिलाएं सूचित सार्वजनिक विमर्श में योगदान दे रही हैं और सत्ता को जवाबदेह ठहरा रही हैं।

खिलाड़ी– भारतीय महिलाएं खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं, अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का गौरव बढ़ा रही हैं।

ये उदाहरण दिखाते हैं कि भारतीय महिलाएं भारत के विकास में कितनी विविध और आवश्यक भूमिकाएँ निभाती हैं।

सोपान

विकसित भारत / 2047 में महिलाओं की भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित चरणों को उठाया जा सकता है–

शिक्षा और कौशल विकास: महिलाओं को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और कौशल विकास के अवसर प्रदान करना। इससे उनकी रोजगार क्षमता बढ़ेगी और वे अर्थव्यवस्था में अधिक प्रभावी ढंग से भाग ले सकेंगी।
आर्थिक सशक्तिकरण: महिलाओं को उद्यमिता, वित्तीय समावेशन और रोजगार के अवसरों तक पहुंच प्रदान करना। इससे वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र बन सकेंगी और अपने परिवारों और समुदायों में योगदान कर सकेंगी।
स्वास्थ्य और पोषण: महिलाओं के लिए बेहतर स्वास्थ्य और पोषण सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित करना। इससे उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होगा और वे अधिक उत्पादक बन सकेंगी।
राजनीतिक भागीदारी : महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना। इससे उनकी आवाज सुनी जाएगी और वे नीति निर्माण में योगदान दे सकेंगी।
सामाजिक सुरक्षा: महिलाओं को हिंसा, भेदभाव और अन्य प्रकार के उत्पीड़न से बचाने के लिए सामाजिक सुरक्षा उपायों को मजबूत करना। इससे वे सुरक्षित और सम्मानित महसूस करेंगी और अपने पूर्ण क्षमता तक पहुंच सकेंगी।
तकनीकी समावेशन: डिजिटल साक्षरता और तकनीकी कौशल प्रदान करना, जिससे महिलाएँ डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग ले सकें।

महत्व

विकसित भारत / 2047 में महिलाओं की भूमिका निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है:
आर्थिक विकास : महिलाएं अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता हैं। उनकी भागीदारी से आर्थिक विकास में तेजी आएगी और गरीबी कम होगी।
सामाजिक विकास: महिलाएं परिवार और समुदाय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके सशक्तिकरण से सामाजिक विकास में सुधार होगा और सामाजिक असमानता कम होगी।
राजनीतिक स्थिरता: महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी से लोकतंत्र मजबूत होगा और राजनीतिक स्थिरता में सुधार होगा।
सतत विकास: महिलाएं प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके सशक्तिकरण से सतत विकास को बढ़ावा मिलेगा।
मानवीय पूंजी: महिलाओं का शिक्षा और स्वास्थ्य में निवेश करना, मानव पूंजी में निवेश करना है, जो देश के भविष्य के लिए आवश्यक है।

उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य, विकसित भारत / 2047 के दृष्टिकोण में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करना, उनके सशक्तिकरण के लिए आवश्यक कदमों की पहचान करना और उनकी भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डालना है। यह शोध पत्र, एक ऐसे भारत के निर्माण में योगदान देगा, जहां महिलाएं अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सकें और देश के विकास में समान रूप से भाग ले सकें।
इस विस्तृत परिचय में, वर्तमान समय के उदाहरणों को शामिल करके, यह स्पष्ट किया गया है कि भारतीय महिलाएं कैसे प्रगति कर रही हैं और विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में उनकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है।
इस शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित है:

- विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करना।
- महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आवश्यक चरणों की पहचान करना।
- महिलाओं की भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डालना।
- विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में महिलाओं की भूमिका को बढ़ावा देने के लिए सिफारिशें प्रदान करना।

संदर्भ

1. नीति आयोग, "विकसित भारत 2047 का दृष्टिकोण"।
2. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, "राष्ट्रीय महिला नीति"।
3. संयुक्त राष्ट्र महिला, "लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण"।
4. विश्व बैंक, "लैंगिक समानता और विकास"।
5. भारतीय संविधान, मौलिक अधिकार और राज्य के नीति निर्देशक तत्व।